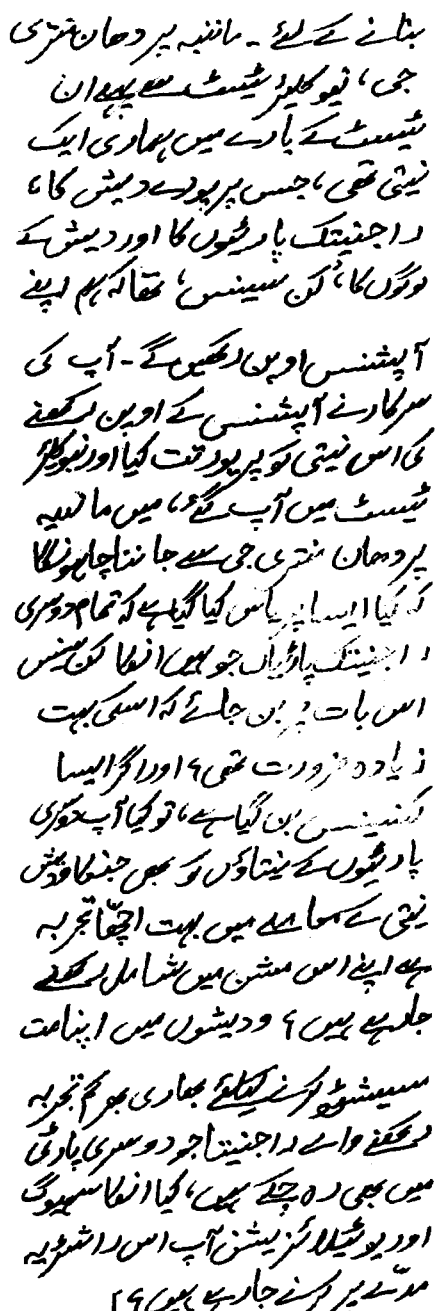

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: जी हां, हम उनका सदुपयोग करने के लिए तैयार हैं। यहां चर्चा विभिन्न स्तरों पर हुई है और उस चर्चा के आधार पर जो नीति बनाई जा रही है उसमें सबके विचारों का ध्यान रखा जा रहा है, समावेश किया जा रहा है। यह प्रश्न पूछा गया है कि हमारी नीति थी विकल्प को खुला रखने की? विकल्प को खुला रखने की नीति एक सर्वानुमति के आधार पर बनी थी लेकिन ऐसा विकल्प जो हमेशा खुला ही रहता है और संकट के समय भी अगर बंद नहीं होता तो यह खुले विकल्प की सही कल्पना नहीं है। देश के चारों तरफ जो परिस्थिति बनी थी, उसको देखने के बाद सरकार को लगा कि अब परमाणु परीक्षण द्वारा यह देख लेना जरूरी है कि हम जिस क्षमता का विकास करना चाहते थे और जिस क्षमता का विकास पिछले 50 साल में हुआ था, वह क्षमता संकट के समय काम आने की स्थिति में है या नहीं और इसलिए विकल्प को खुला नहीं रखा गया, विकल्प का उपयोग किया गया। उस बारे में ईमानदारी से मतभेद हो सकते हैं, लेकिन इस सवाल पर, सभापति महोदय, काफी बहस हो चुकी है और मैं समझता हूं कि इस पर ज्यादा बहस की आवश्यकता नहीं है।

*223 *[The questioner (SHRI GHUFRAN AZAM) was absent. For answer (vide Col. 32 infra]*

*224 *[The questioner (SHRI AHMED PATEL) was absent. For answer (vide Col. 33 infra]*

*225 *[The questioner (SHRI JOYANTA ROY) was absent. For answer (vide Col. 34 infra]*

Harmful Chemicals in Cattle Feed

*226. SHRI RAM NATH KOVIND:
DR. RANBIR SINGH:

Will the PRIME MINISTER be pleased to state:

(a) whether it is a fact that cattle feed mixed with harmful chemicals and dead animal by-products are being produced and sold in the country;

(b) whether it is also a fact that such dead animal by-products are mainly responsible for 'Mad Cow disease' in cattle; and

†The Question was actually asked on the floor of the House by Shri Ram Nath Kovind.

(c) if so, what steps are being taken to prevent the mixture of harmful things in cattle feed and to prevent possibility of mad cow disease in the country?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI SOMPAL): (a) to (c) In India, we do not have a system of feeding cattle with meat/bone meal or animal offals. BSE (Mad Cow Diseases) has never been reported in India. Cattle feed standards of Bureau of Indian Standards, which serve as guidelines for feeding, specifically prohibit incorporation of harmful chemicals or dead animal by-products in cattle feed.

श्री राम नाथ कोविन्द: सभापति महोदय, पिछले दो वर्षों के दौरान यूरोपियन कंट्रीज़ से बहुत सारी ऐसी रिपोर्ट्स आई हैं जिनके आधार पर यह पता चला है कि वहां पर जो दूध देने वाले पशु हैं उनमें एक डिसीज़ डेवलप हुई और वह इसलिए डेवलप हुई क्योंकि उनको जो पशु-आहार दिया जाता था, उसमें मरे हुए पशुओं के केमिकल्स, हड्डी का चूरा वगैरह मिलाया जाता था और वह दुर्गन्ध युक्त होता था और इसके कारण दो साल पहले यूरोपियन कंट्रीज में और खासकर के इंग्लैंड में जब यह बीमारी फैली तो इसने एक महामारी का रूप ले लिया और इस कारण जितने दूध देने वाले पशु थे उन्हें उन सबको जिंदा जलाना पड़ा और बहुत सारे पशुओं को, जिनको जलाया नहीं जा सका, उनको समुद्र में फैंकना पड़ा।

सभापति जी, मंत्री जी ने इस बात से इंकार किया है कि भारत में इस प्रकार की कोई बीमारी है। मैं मंत्री जी का ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा कि एक "डेयरी इंडिया 1997" का पब्लिकेशन आया, उसके तहत यह जानकारी दी गई है और पूरी आशंका व्यक्त की गई है कि भारत में भी जो दुधारू पशु हैं, उनमें भी इस प्रकार की बीमारियां फैल रही हैं, यद्यपि उस बीमारी ने अभी तक महामारी का रूप नहीं लिया है।

मैं मंत्री जी से जानना चाहूंगा कि इस प्रकार की जो आशंका इस पब्लिकेशन के आधार पर है, क्या उसके बारे में मंत्रालय को जानकारी है और यदि उनको जानकारी है तो इस संबंध में उन्होंने क्या कदम उठाए हैं?

श्री सोमपाल: सभापति महोदय, मैं पहले ही कह चुका हूं कि इस बीमारी के फैलने की कोई भी रिपोर्ट भारत के किसी भी कोने से अभी तक नहीं मिली है। जहां तक इस बीमारी से निपटने का सवाल है, यह केवल यूरोप के कुछ देशों विशेषकर इंग्लैंड में हुई है और वहीं इसने महामारी का रूप धारण किया है। पेरिस में इससे संबंधित एक ऐक्शन ग्रुप है, एक लेबोरेट्री है। उसके साथ जानकारी का आदान-प्रदान करने के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान और हमारे डेरी विभाग के लोगों ने सतत् संपर्क बनाया हुआ है। पर हमारे यहां अभी तक इसकी न कोई आशंका है और न रिपोर्ट है। अगर कहीं इस तरह की रिपोर्ट छपी है तो वह सर्वथा निराधार है।

श्री राम नाथ कोविन्द: सभापति महोदय, मेरा स्पैसिफिक प्रश्न था कि जो डेरी इंडिया 1997 पब्लिकेशन हुआ है, उसकी जानकारी क्या इनके मंत्रालय को है और यदि है तो उसके आधार पर इन्होंने क्या कदम उठाए हैं?

श्री सोमपाल: उस रिपोर्ट को मैंने स्वयं नहीं देखा है पर यह जानकारी निर्विवाद है और बिल्कुल ठीक है कि यह बीमारी हिंदुस्तान में कहीं भी नहीं हुई है। यदि ऐसी कोई रिपोर्ट छपी भी है तो वह गलत है, निराधार है।

MR. CHAIRMAN: Dr. Ranbir Singh. Not present. Shri Rajnath Singh 'Surya'.

श्री राजनाथ सिंह "सूर्य": श्रीमन, मंत्री जी ने कहा है कि इस प्रकार की कोई बीमारी नहीं है और अगर इस प्रकार की कोई रिपोर्ट किसी जगह प्रकाशित हुई है तो वह बिल्कुल निराधार है। महोदय, हम कई बीमारियों के बारे में देख चुके हैं कि जो बीमारियां हमारे देश में नहीं थीं और अन्य देशों में फैलीं, वे महामारी का स्वरूप लेकर हमारे देश में भी प्रकट हुई हैं। अब यूरोप में और विशेषकर इंग्लैड में इस प्रकार की जो फीड्स बनाई जाती थीं, उसके कारण वह महामारी पैदा हुई है। मंत्री जी कह रहे हैं कि हमारे यहां जो ऐनीमल फीड्स बनाई जाती हैं दुधारू पशुओं के लिए, उसमें इस प्रकार की चीजों की मिलावट नहीं होती है और जो भारतीय मानक संस्थान है, उनके द्वारा उन फीड्स का मानकीकरण होता है और उसमें इन चीजों का सम्मिश्रण नहीं होने दिया जाता है। महोदय, हमारी जो प्रयोगशाला है, उसमें इन फीड्स के सम्मिश्रण में अवांछित अंशों के परीक्षण की और उसके मानकीकरण की कोई व्यवस्था नहीं है। महोदय, इंग्लैंड और यूरोप के देशों में जो यह स्थिति पैदा हुई है, इसकी पृष्ठभूमि में मैं मंत्री जी से यह पूछना चाहता हूं कि हमारे यहां जो फीड्स बनाने वाली कंपनियां

हैं वे जिस प्रकार की फीड्स बनाती हैं उन फीड्स की आप एक बार फिर से जांच करा लेंगे इस आशंका को देखते हुए कि कहीं यह बीमारी हमारे यहां न आ जाए? क्या आप इस आशंका को ध्यान में रखते हुए इस बीमारी की रोकथाम के लिए फिर से इन फीड्स की जांच कराने का प्रयत्न करेंगे?

श्री सोमपाल: सभापति महोदय, जैसा मैंने पहले कहा कि इस बीमारी को 'Mad Cow disease' or BSE, boving spongy-form encephalopathy, कहते हैं। यह केवल इंग्लैंड में फैली है और इसका केवल एक ही कारण है कि मृत पशुओं के जो तत्व हैं—मांस और मज्जा, इनको ऐनीमल फीड्स में, पशुओं के खाद्य में मिलाया जाता है। उसके कारण यह बीमारी होती है। हमारे यहां इस प्रकार की चीजों का पशुओं के खाद्य में सम्मिश्रण करना पूरी तरह वर्जित है और भारतीय मानक ब्यूरो ने इसके लिए कुछ स्पैसिफिकेशंस और मानक स्थापित कर रखे हैं। उनको ध्यान में रखा जाता है और किसी भी निर्माता को अनुमति नहीं है इस तरह की चीजों का पशुओं के खाद्य में सम्मिश्रण करने के लिए।

महोदय, जहां तक इसके बारे में जानकारी का प्रश्न है, मैं पहले ही कह चुका हूं कि Office International des Epizooties जो नोडल आर्गनाइजेशन है अंतर्राष्ट्रीय स्तर की, पेरिस में इसका कार्यालय है और विश्व खाद्य संगठन और विश्व स्वास्थ्य संगठन, इस सभी संगठनों के साथ हमने सतत संपर्क बनाया हुआ है। अभी तक इस प्रकार की आशंका का कोई आधार नहीं है। जहां तक वैधानिक प्रावधानों का सवाल है, यह बात सही है कि अभी तक कोई वैधानिक प्रावधान इस तरह का नहीं है। केवल भारतीय मानक ब्यूरो के मानक मात्र हैं। वैधानिक प्रावधान करने के लिए एक ड्राफ्ट हमारे मंत्रालय में तैयार किया जा रहा है और आने वाले समय में निश्चित रूप से इसको कानून का रूप देने की हमारी मंशा है।

श्री शिव चरण सिंह: माननीय मंत्री जी, क्या आपके यहां कैटलफील्ड बनाने के देश भर में जो कारखाने हैं राज्यवार उनका रजिस्ट्रेशन आपके यहां है या नहीं? दूसरे जो, कैटलफील्ड बनाने वाली फैक्ट्रियां हैं पशुओं के लिए क्योंकि फिफ्थ प्लान के बाद हमारे यहां कैटलफील्ड बनने लगा है। जब हमारे यहां डेयरी डेवलपमेंट हुआ, यह फिफ्थ और सिक्थ प्लान में शुरू हुआ है। उसके बाद से इन कैटलफील्ड प्लांट्स का आपके यहां रजिस्ट्रेशन नहीं है, उनका एक फार्मूला नहीं है और उनकी जांच की कोई प्रक्रिया नहीं है। इसलिए एडल्ट्रेशन के चांसेज़ हैं, फर्ज़ी कारखाने खोलने के चांसेज़ हैं और फर्ज़ी कारखाने.....क्योंकि ऐनिमल हज़्बैंडरी सरकार का मामला है, राज्य सरकार इसमें कुछ फीड बनाने वाली फैक्ट्रियों को सबसिडी भी देती है। क्या इस बात को मॉनीटर करने के लिए आप कोई व्यवस्था करेंगे?

श्री सोमपाल: सभापति महोदय, राष्ट्रीय स्तर पर कंपाउंड लाईवस्टॉक फीड मैन्युफैक्चरर्स ऐसोसिएशन ऑफ इंडिया एक संगठन है और यह इस बात का ध्यान रखता है, उन्होंने यह अंडरटेकिंग भी दे रखी है कि अफलाटॉक्सीन और एंडी न्यूट्रीशनल जो मिश्रण हैं, वे किसी में नहीं किए जा सकते..... (व्यवधान)..... मैं उत्तर दे रहा हूं सारी बात का। जहां तक इसकी अपनी जो आंतरिक व्यवस्था है, इन पशु खाद्य मिश्रण निर्माताओं की, उसके अतिरिक्त हमारा जो डिपार्टमेंट आ ॅफ एनीमल हज़्बैंडरी एंड डेयरिंग है, उसके पास तीन रीजनल फीड ऐनेलिटिकल लैबोरेटरीज़ है, मुंबई, भुवनेश्वर और चंडीगढ़ में और फीड मैन्युफैक्चरर्स और यूज़र्स जो है, वे सैम्पल वहां भेज सकते हैं और वहां जाकर चेक करा सकते हैं। इसकी सारी जांच की व्यवस्था हमारे पास है पर जब खाद्य के निर्माता ज्यादा होंगे और उसकी मात्रा बढ़ेगी तो उसके साथ लैबोरेटरीज़ की संख्या भी बढ़ा दी जाएगी।

SHRI V.P. DURAISAMY: In the Thirunelveli district, a southern district of Tamil Nadu, thousands of goats recently died due to 'blue-tongue disease'. We do not know the correct meaning of it, but we came to know that this is the name of the disease. The State Government has also given so much of assistance to fight the disease. I would like to know whether the Government of India has got that information and whether the Government of India is going to send a delegation to study the disease.

SHRI SOMPAL: Sir, this question pertains to Mad Cow disease only. The hon. Member is asking about something else. I know of the disease and we have been monitoring it. Teams have already studied it and preventive and curative measures have already been taken. Though it is not related to the question, but this is the situation.